देशी बीजों का जवाब नहीं

■ बाबा मायाराम

मध्यप्रदेश के सतपुड़ा अंचल में पहले कठिया, जलालिया, मुंडी पिस्सी, लाल पिस्सी, सफेद पिस्सी, बंसी, बंगेसिया और सोहरिया आदि देशी गेहूं की किस्में थीं। करधना, झीना, बाघमूंछ, काली मूंछ, बटरो, क्षत्री, ललई, भदेल जैसी कई देशी धान की किस्में थी। इसी प्रकार ज्वार, चना, मसूर, तुअर, मक्का, बाजरा की किस्में थी। इनमें न सिर्फरंग-बिरंगा सौंदर्य था बल्कि अलग-अलग गुण, पोषक तत्व और स्वाद में भिन्नताएं थीं। लेकिन अब देशी बीज लुप्त हो गए हैं। जबसे यहां तवा नहर की सिंचाई आई है तबसे नए हाईब्रीड बीज आ गए। इन बीजों में रासायनिक खाद की मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ाने पर भी उत्पादन क्रमश: घटते जा रहा है। जिससे किसान परेशान होकर अब जान दे रहे हैं। हाल ही में चार दिन में तीन किसानों ने आत्महत्या की है।

यह एक तरह से हरित क्रांति का संकट भी है। ये उन चमत्कारी बीजों की सीमा भी है, जिन्हें हरित क्रांति के समाधान के रूप जी एम (जेनेटिकली मोडीफाइड) यानी जीन संशोधित बीजों को पेश किया जा रहा है। जो हरित क्रांति के बीजों से भी ज्यादा खतरनाक है। हाल ही में होशंगाबाद- हरदा जिले में सोयाबीन की फसल अधिक वर्षा से चौपट हो गई। औसत उत्पादन उत्पादन 20 किलोग्राम से 2 क्विंटल तक निकला। हिम्मत हारकर होशंगाबाद जिले की डोलरिया तहसील में दो और सिवनी मालवा तहसील में एक किसान ने आत्महत्या की है।

लेकिन खेती के इस अभूतपूर्व संकट पर गंभीरता से विचार करने के बजाए जैव तकनीक से तैयार जीन संशोधित (जी.एम.) बीजों को लाने की तैयारी की जा रही है। हाल ही में भोपाल में एक बैठक हुई जिसमें सोयाबीन के जी एम बीजों को लाने की वकालत की गई। इस बैठक का आयोजन एबल एजी नामक संस्था ने किया, जो जैव तकनीक से तैयार करने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियों का संगठन है। नर्मदा कछार की काली मिट्टी बहुत उपजाऊ मानी जाती है। इसे काली कपासीय मिट्टी ((ब्लैक कॉटन साइल) भी कहा जाता है। इसमें बिना पानी या कम पानी और बिना खाद के गेहूं हो जाता था। इस क्षेत्र में करीब 30 साल पहले कई तरह के परंपरागत देशी बीजों की खेती होती थी। ज्वार, तुअर, मूंग, उड़द, समा, कोदो, कुटकी, देशी धान, देशी गेहूं, चना मसूर, अलसी, तिवड़ा, मटर, मूंगफली, कपास आदि फसलें हुआ करती थीं।

बिर्रा और उतेरा की खेती

चना और गेहूं की मिलवां या बिर्रा खेती होती थी। बिर्रा की रोटी बुजुर्ग बहुत पसंद करते थे। उतेरा या सतगजरा जैसी मिश्रित खेती होती थी, जो अब भी कुछ हद तक जंगल पट्टी में शेष है। उतेरा में चार-पांच फसलें मिलाकर बोते हैं जिसमें कभी एक फसल मार खा गई तो उसकी पूर्ति दूसरे से हो जाती थी। जबकि नगद फसल में कीट या रोग लगने से या प्राकृतिक आपदा आने से पूरी फसल नष्ट हो जाती है। जिससे किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है। जैसा कि इस वर्ष सोयाबीन की फसल अधिक वर्षा से खराब हो गई। लेकिन तवा नहर की सिंचाई आने के बाद रबी में गेहूं और खरीफमें सोयाबीन जैसी एकल फसलें ही हो रही हैं।

तवा बांध की सिंचाई के बाद देशी बीजों की जगह संकर (हाईब्रीड) बीज आ गए। जमाड़ा गांव के जीवनसिंह पटेल बताते हैं कि पहले किसान देशी बीजों से खेती करते थे। वे फसल में से बीज बचाकर अगली बोवनी के लिए रखते थे। या पड़ोसी किसानों से बिजहाई (बीज के लिए) ले लेते थे। बीजों के रखरखाव व भंडारण में महिलाओं की विशेष भूमिका हुआ करती थी। देशी बीज निशुल्क मिल जाते थे जबकि संकर बीजों को खरीदना पड़ता है। देशी बीज किसानों की मुट्ठी में थे, जबकि संकर बीजों के लिए उसे कंपनियों या सरकारी एजेंसियों पर निर्भर रहना पड़ता है।

वे बताते है कि देशी बीजों में रोगों व सूखा से लड़ने की क्षमता होती थी। पहले हम सिर्फ गोबर खाद ही डालते थे और कीटनाशकों का प्रयोग नहीं करते थे। फसल का ज्यादा नुकसान नहीं होता था। फसलों में पानी देने की जरूरत नहीं थी। लेकिन अब बार-बार कीटनाषक, नींदानाशक और टॉनिक डालना पड़ता है, और बार-बार पानी भी देना पड़ता है। इससे हमारी भूमि की उर्वरक शक्ति कम हो रही है और भूमिगत जल भी हर साल नीचे जा रहा है और जहरीला हो रहा है। हमारे स्वास्थ्य और पशुओं के स्वास्थ्य पर इसका विपरीत असर पड़ रहा है। पशुओं को खाने के लिए चारा या भूसा भी नहीं मिल पा रहा है। इस क्षेत्र में खेती में पूरी तरह मषीनीकरण हो गया है। ट्रैक्टर और हारवेस्टर से खेती होती है। कई जगह फसलों के जहरीले दाने चुगने से पक्षियों जैसे मोरो के मरने के समाचार आते रहे हैं।

जंगलों से मिले प्राकृतिक बीज

बीज खेती का आधार है, जीवन है, सृजन है। और ये बीज आसमान से नहीं टपके हैं। बल्कि हमारे पूर्वजों ने इन्हें विकसित, संरक्षित व सवंर्धित किया है। इनकी पैदावार, गुणों, स्वाद व पोषक तत्वों में सुधार करती आ रही हैं। गेहू, धान तथा अन्य खाद्यान्न फसलों के बीज जंगलों में प्राकृतिक रूप से होते थे। जिन्हें तब से लेकर आज तक करीब दस हजार वर्षों में कृषि के विकास के साथ विकसित किया गया है।

(बाकी पेज 10 पर)

10 Dec 2011, Daily Chhattisgarh, Raipur